Vol 4 Issue 8 Feb 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-8 | Feb-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

"ग्रामीण विकास की दिशा में कृषि एवं सेवा में कार्यरत महिलाओं का योगदान–एक विश्लेषनात्मक अध्ययन" (छत्तीसगढ़ के रायपुर, जाँजगीर–चाम्पा एवं कोरबा जिले के विशेष संदर्भ में)

मनीशा दुबे , गायत्री गोयलँ

[1]आचार्य एवं विभागाध्यक्ष , अर्थशास्त्र विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) बिलासपुर, छत्तीसगढ़।
[2]शोध छात्रा , अर्थशास्त्र विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

सारांश : प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत छत्तीसगढ़ के ग्रामीण विकास में कृषि एवं सेवा क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं का अध्ययन किया गया है, किन्तु उक्त विषय में विस्त्रत तथा गहन अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ के तीन जिलों रायपुर, जांजगीर–चांपा एवं कोरबा एवं इनमें 5 विकासखण्ड तथा इन विकासखण्डों के अंतर्गत 50 ग्रामपंचायतों का चयन प्राथमिक अध्ययन हेतु किया गया है। चूंकि किए गए शोध का अध्ययन बिन्दु कृषि एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत महिला हैं, अतः इस संदर्भ में उनके द्वारा कृषि एवं सेवा क्षेत्रों के अंतर्गत किए जाने वाले कार्य स्वयं की कृषि, शिक्षा, समाज कल्याण, आय, व्यय, बचत को रेखांकित कर सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तावना :

छत्तीसगढ़ की बहुत बड़ी आबादी गांवों में निवास करती है जिनमें से 80 प्रतिशत आबादी कृषि पर आश्रित है। माना जाता है कि छत्तीसगढ़ गुजरात के बाद देश का दूसरा ऐसा राज्य है जहाँ कृषि विकास की दरें सबसे ज्यादा हैं। कृषि क्षेत्र न सिर्फ औद्योगक एवं सेवा क्षेत्र की खाद्यान्न संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करता है बल्कि औद्योगिक क्षेत्र को ये माल की पूर्ति एवं साथ ही औद्योगिक क्षेत्र के निर्मित माल के लिए बाजार भी उपलब्ध कराता है। चूंकि छत्तीसगढ़ में कार्यरत जनसंख्या राष्ट्रीय औसत से ज्यादा है अतः छत्तीसगढ़ में सर्वेक्षण में पाया गया कि छत्तीसगढ़ में ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता पुरुषों की तुलना में अधिक है। महिलायें न सिर्फ घर के दायित्वों का निर्वहन करती हैं बल्कि घर से बाहर निकलकर खेती–किसानी के कार्य एवं उद्योग क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराती हैं। आज जिस प्रकार ग्रामीण पुरुषों का शहरों में पलायन बढ़ रहा है उससे महिलाओं के ऊपर खेती करने की जिम्मेदारी और बढ़ती जा रही है, महिलायें कृषि के साथ–साथ एक ग्रहणी की पूर्ण जिम्मेदरी निभाते हुए सरकारी दफ्तर, मजदूरी अन्य छोटे बड़े उद्योग, मुर्गीपालन, दुग्ध उद्योग, मत्स्य पालन, टोकरी बनाना, पत्थर की मूर्ति, चमडे के जुते, मिट्टी के बर्तन बनाना, कपडा बुनना आदि ग्रामीण कुटी उद्योग के रुप में कार्य करती हैं। कुटीर उद्योगों में भी महिलाओं की व्यापक स्तर पर विद्यमानता को देखते हुए गत कुछ वर्षों से सरकार ने अर्थव्यवस्था में महिलाओं के विकास पर विशेष ध्यान दिया है इसके अतिरिक्त राजनीति, शिक्षा, सामाजिक विकास आदि में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है जिसके अंतर्गत जिला पंचायत व ग्राम प्रधानों के लिए महिलाओं की सीट अरक्षित की गयी है ताकि महिलाओं की क्षमता का सम्पूर्ण उपयोग देश के विकास तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को उन्नत बनाने के लिए किया जा सके। अर्थव्यवस्था के नये क्षेत्र खुलने के साथ ही उनकी संख्या और बढ़ेगी। सामाजिक दृष्टि से लड़कियों के लिए बाहर निकलने देने के बारें जो वर्जना और हिचक थी काफी हद तक दूर होती जा रही है पुरूषों की तुलना में महिलायें और अधिक निष्ठा और लगन के साथ काम करती हैं। हमारे देश में कुछ काम ऐसे है जो एक तरह से आरक्षित मान लिए गये हैं। मनोरंजन ,विज्ञापन,मीडिया और आधुनिक व्यवसायों के साथ –साथ नर्सिग, शिक्षा, एयरहोस्टेज, चिकित्सा जैसे व्यवसायों में महिलाएं अधिक सफलता के साथ काम कर रही हैं । इस प्रकार महिलायें परम्परागत कार्यो से आगे निकलकर इन व्यवसायों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही है जिन्हे अब तक केवल पुरूषों का अधिकार क्षेत्र माना जाता था सेना, पुलिस, व्यपार, प्रबंधन, ड्राइविग जैसे कठिन और अधिक समय व कठोर श्रम की मांग करने वाले कार्यो में भी महिलाएं खुलकर भाग लेने लगी है। इस प्रकार लगता है कि पांचवी आर्थिक गणना में जो तस्वीरें सामने आयी हैं वह और गहरी होगीं, शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रो में काम काजी महिलाओं की आजादी बढ़ेगी निश्चय ही औरतों की भागीदारी बढ़ने से देश की आर्थिक प्रगति का चक्का और घूमेगा, साथ ही महिलाओं में आर्थिक आत्म–निर्भरता बढ़ने से समाज में उनकी स्थिति बेहतर होगी और स्त्री–पुरूष समानता का सपना जल्दी ही सकार हो सकेगा।

अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रस्तावित शोध का अध्ययन के मुख्य उद्देश्य है।

(1)ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के योगदान का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न शून्य परिकल्पनाओं की जाँच की गई है।

(1)ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के योगदान नगण्य है।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध के अध्ययन का क्षेत्र छत्तीसगढ़ है, किन्तु सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ के गहन अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ के तीन जिलो रायपुर, जांजगीर चांपा, कोरबा का चयन सविचार किया गया है। चयनित जिलों के अंर्तगत 5 विकासखण्डों एवं प्रत्येक विकासखण्ड से 10 ग्राम पंचायत एवं प्रत्येक ग्राम पंचायतो से 10 महिलाओं का चयन दैव निदर्शन प्रणाली द्वारा किया गया हैं। इस प्रकार कुल 500 महिलाओं से अनुसूची भरवाई गई चूँकि प्रस्तुत शोध का अध्ययन बिन्दू कृषि एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत महिलाएं है अतः इस हेतु 500 महिलाओं में कार्यरत 52 महिलाओं का प्राथमिक अध्ययन कृषि एवं सेवा क्षेत्र हेतु चुना गया है प्रस्तुत शोध की उद्देश्य पूर्ति हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो प्रकार के आँकड़ो का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्राथमिक आँकड़ो का संग्रहण अनुसूची के माध्यम से किया गया है जबकि द्वितीयक आँकड़ों के स्त्रोत ग्रामीण महिलाओं पर हुये शोध प्रबंध, शोध–पत्र, प्रकाशित पत्र–पत्रिकाएं, समाचार पत्र, सरकारी एवं गैर सरकारी सर्वेक्षणों रिपोर्ट में प्रकाशित रहें है।

अध्ययन की सीमाएं:–

प्रस्तुत शोध के अंर्तगत समय, धन एवं श्रम की सीमाओं को ध्यान में रखते हुये छत्तीसगढ़ राज्य के केवल तीन जिलो का चयन किया गया है। अध्ययन हेतु चुनी गई 500 ग्रामीण महिलाओं में से ऐसी 52 महिलाओं का अध्ययन किया गया है जो कृषि एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत है, जबकि कृषि एवं कुटीर उघोग में कार्यरत महिलाओं काग्रामीण विकास में भूमिका को अध्ययन में शामिल नहीं किया गया हैं।

_तालिका क्रमांक 1.1_
चयनित जिलों के अंतर्गत सर्वेक्षित महिलओं द्वारा कृषि तथा सेवा क्षेत्र में सम्मिलित रुप से योगदान करने वाली महिलाओं का विवरण

ftyk	fodkl[k.M	df'k $ lok {k= e ;kxnku			
		—f"k e dk;jr	lok {k= e dk;jr		
		Lo; dh —f'k	f"k{kk	lekt dY;k.k	dy ;kx
jk;ij	fcykbx<	01(50) (7.14)	-----	1(50) (3.12)	02(100) (3.84)
	dlMky	04(26.66) (28.57)	01(6.66) (16)	10(66.66) (31.25)	15(100) (28.84)
tktxhj pkEik	uokx<	02(33.33) (14.28)	01(16.66) (16.66)	3(50) (9.09)	06(100) (11.53)
	ikex<	02(25) (14.26)	01(12.5) (16.66)	05(62.5) (15.62)	08(100) (15.38)
dkjck	ikyh	05(23.80) (37.71)	03(14.28) (50)	13(61.90) (40.62)	21(100) (40.38)
dy ;kx		14(26.92) (100)	06(11.53) (100)	32(61.53) (100)	52 (100)

स्त्रोत – 1. प्राथमिक सर्वेक्षण 2011–12
टीप 2.कोष्टक में उल्लिखित संख्या प्रतिशत है

तालिका 1.1 के विश्लेषणात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि चयनित जिलों के अंतर्गत सर्वेक्षित महिलाओं में से 10.4% महिलाएं कृषि तथा सेवा दोनों क्षेत्रों में संलग्न है। सेवा क्षेत्र में इन महिलाओं की सहभागिता मुख्य रूप से शिक्षा एवं पंचायती स्तरों पर पाई गई सरकार द्वारा महिलाओं की प्रशासन में सहभागिता वृद्धि हेतु किए गए प्रयासों के फलस्वरूप जहाँ महिलाओं में अंतराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर प्रशासन कार्यों में अपनी सहभागिता दर्ज की है वही ग्रामीण महिलाएं भी इसमें पीछे नहीं है जिसकी पुष्टि सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त आंकड़ों के माध्यम से की जा सकती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायती स्तर पर महिलाओं की सहभागिता पंच, सरपंच के रूप में महत्वपूर्ण रही है। जिसका प्रतिशत 61.55% के साथ अधिकतम रहा, साथ ही सेवा क्षेत्र में सहभागिता के साथ–साथ इन महिलाओं द्वारा खेती संबंधी कार्यो का किया जाना पाया गया, जिसका प्रतिशत 26.92% दर्ज किया गया। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं का प्रतिशत न्यून (11.53%) रहा एवं स्वास्थ्य कार्यकर्ता के रूप में मितानिन कार्यों में महिलाओं की सहभागिता मात्र 3% पाई गई।

तालिका क्रमांक 1.2
चयनित जिलों के अंतर्गत सर्वेक्षित कार्यरत महिलाओं द्वारा कृषि तथा सेवा क्षेत्र में आय, व्यय, बचत का विवरण

ftyk	fodkl [k.M	df'k+ lok {k= e dk;jr efgykvk dh okf'kd vk; ¼gtkj e½							df'k+ lok {k= e dk;jr efgykvk dh okf'kd 0;; ¼gtkj e ½							df'k+ lok {k= e dk;jr efgykvk dh okf'kd cpr ¼gtkj e½						
		0& 10	10& 20	20& 30	30&40	40&50	50 l vf/kd	;kx	0&10	10&20	20& 30	30& 40	40& 50	50 l vf/kd	;kx	0&10	10&20	20&30	30& 40	40&50	50 l vf/kd	;kx
jk;ij	fcykbx<	&	&	&	-	-	02 (100) (4.87)	02 (3.84)	-	02 (100) (6.89)	-	-	-	-	02 (3.84)	-	-	-	01 (7.14)	-	-	01 (2.5)
	dlMky	&	&	&	01 (100)	05 (33.33) (50)	09 (21.95)	15 (28.84)	-	10 (66.66) (34.48)	-	05 (33.33) (50)	-	-	15 (28.84)	-	-	04 (36.36) (57.14)	01 (9.09) (7.14)	03 (27.27) (27.27)	03 (27.27) (42.85)	11 (27.5)
tktxhj &pkik	uokx<	&	&	&	&	01 (16.66) (10)	05 (83.33) (12.19)	06 (11.53)	-	03 (50) (10.34)	03 (50) (23.07)	-	-	-	06 (11.53)	-	-	-	02 (50) (14.28)	02 (50) (18.18)	-	04 (10)
	ikex<	&	&	&	-	01 (12.5) (10)	07 (87.5) (17.07)	08 (15.38)	-	04 (50) (13.79)	02 (25) (15.38)	02 (25) (20)	-	-	08 (15.38)	-	01 (16.66) (100)	01 (16.66) (14.28)	01 (16.66) (7.14)	02 (33.33) (18.18)	01 (16.66) (14.28)	06 (15)
dkjck	ikyh	&	&	&	-	03 (14.28) (30)	18 (85.71) (43.90)	21 (40.38)	-	10 (47.61) (34.48)	08 (38.09) (61.53)	03 (14.28) (30)	-	-	21 (40.38)	-	-	02 (11.11) (28.57)	09 (50) (64.28)	04 (22.22) (36.36)	03 (16.66) (42.85)	18 (45)
dy;kx		&	&	&	01 (1.92)	10 (19.23)	41 (78.84)	52 (100)	-	29 (55.76)	13 (25)	10 (19.23)	-	-	52 (100)	-	01 (2.5)	07 (17.5)	14 (35)	11 (27.5)	07 (17.5)	40 (100)

स्त्रोत – 1. प्राथमिक सर्वेक्षण 2011–12 टीप
2.कोष्टक में उल्लिखित संख्या प्रतिशत है

तालिका क्रमांक 1.2 के विश्लेषणात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि चयनित जिलों के अंतर्गत सर्वेक्षित महिलाओं की कृषि कार्यों के साथ–साथ सेवा क्षेत्रों में भी सहभागिता दर्ज की गई। खेती बाड़ी के कार्यों के साथ–साथ सेवा क्षेत्र में सहभागी महिलाओं द्वारा पंच, सरपंच, शिक्षण एवं मितानिन का कार्य किया जाना पाया गया। इस संबंध में इनकी आय, व्यय एवं बचत संबंधी स्थिति का अध्ययन करने पर पाया गया कि 50 हजार रू. वार्षिक आय अर्जित करने वाली महिलाओं की औसतन संख्या 8.2 के साथ अधिकतम रही जबकि वार्षिक व्यय में 10–20 हजार रू. व्यय करने वाली महिलाएं 59.36% के साथ अधिकतम रही। कृषि कार्यों के साथ–साथ सेवा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं में से 76.92% महिलाओं द्वारा ही बचत संबंधी योगदान किया जाना पाया गया, जबकि 23.93% महिलाओं का बचत संबंधी योगदान शून्य दर्ज किया गया, जिसका मुख्य कारण एक ओर प्राप्त आय का अपर्याप्त होना, तो दूसरी तरफ मकान की मरम्मत एवं सामाजिक कार्यों के रूप में मृत्यु भोज एवं विवाह पर किए जाने वाले व्यय का अधिक किया जाना पाया गया।

निष्कर्ष :–

छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान है और यह योगदान केवल छत्तीसगढ़ तक सीमित नहीं है बल्कि भारत सहित विश्व के सभी विकासशील देशों में है महिलाएं घर परिवार, खेती किसानी, बागवानी और पशुपालन के कार्यो में दिन–रात पूरी निष्ठा और ईमानदारी से लगी रहती है।1 परंतु व्यावहारिक धरातल पर उनके कार्यो का समुचित मूल्यांकन नहीं किया जाता समान कार्यों के लिए उन्हे पुरूषों से कम मेहनताना दिया जाता है। अनेक प्रयासो, सब्सिडी, तथा प्रोत्साहन के बावजूद आज केवल 17% महिलाओं के पास ही जमीन का कब्जा है, जबकि छत्तीसगढ़ में यह आंकडा 15.

30% है। और जिन महिलाओं का भूमि पर कब्जा भी है। उनमें भी ज्यादातर लघु एवं सीमांत कृषकों की श्रेणी में आते है। सिंचाई सुविधाओं की अपर्याप्तता, ऋणग्रस्तता के कारण कृषि भूमि के सवामीत्व के बावजूद 17.96% महिलाओं द्वारा स्वयं की कृषि न करके ठेका, मजदूरी, अथवा अन्य कार्यो को करने को विवश है। इनकी दृष्टि में कृषि मात्र एक घाटे अथवा जोखिम भरा व्यवसाय रह गया है– परिणामतः वे मानसिक रूप से स्वयं को कृषि हेतु तैयार नहीं कर पा रही है। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी व्यवस्था एवं सोच विकसित की जाए जिसमें महिलाओं को इस क्षेत्र में भी पुरूषों के समान दर्जा दिए जाने की स्थिति निर्मित हो। साथ ही भूमि के स्वामित्व से लेकर उत्पादित फसल, उनके स्वरूप एवं प्राप्त आय से लेकर उनके व्यय तक में महिलाओं की निर्णायक भूमिका मजबूत हो सके।

सुझाव :–

1.कृषक महिलाओं के लिए विशेष प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था की जाए।
2.ग्रामीण रोजगार केन्द्रों की स्थापना की जाए।
3.सेवा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को स्थायी एवं नियमित किया जाना चाहिए।
4.ऋण सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिए।
5.कृषि विश्वविद्यालयों में महिलाओं के लिए स्थानों के लिए आरक्षण किया जाए।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

शोध प्रबंध

1.मुखर्जी, रविन्दनाथ (1971), सामाजिक शोध एवं सर्वेक्षण, दिल्ली विवेक प्रकाशन।
2.कृष्णराज, एम.ए. (1988) "भारत में सामाजिक आर्थिक विकास के वृहद प्रक्रिया के संदर्भ में ग्रामीण महिला की स्थिति (शोध प्रबंध)।
3.सुन्दरम, (1989) "अंतर्राज्यीय श्रम शक्ति में महिलाओं की सहभागिता दर का विश्लेषण" (शोध प्रबंध)
4.चौबे, जे.एल. (1995) "रायगढ़ जिले में कृषि श्रमिकों की आर्थिक दशा का एक विश्लेषाणत्मक अध्ययन" अप्रकाशित शोध प्रबंध, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर।
5.सिंह, दिनेश कुमार (2002) "ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक सहभागिता एक सैद्धांतिक विश्लेषण, शोध प्रबंध
6.अहिरे सीताराम (2009) "आदिवासी विकास परियोजनाओं का खेतिहर महिला श्रमिकों पर प्रभाव, एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन" शोध प्रबंध शासकीय कला एवं वाणिजय महाविद्यालय, इंदौर, (म.प्र.)

7.शोध प्त्र

8.यादव सिंह, महेन्द्र शर्मा गोपाल, (2008) "निजी क्षेत्र में महिला आरक्षण : समस्याएँ और समाधान, रिजर्व जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंस जनवरी – जून 4 (2) : 351–354.
9.तिवारी, श्रीवास्तव, सुचिता किरनलता, (2008), "सतना शहर की घरेलू एवं कार्यकारी महिलाओं की प्रबंधकीय क्षमता का अध्ययन, रिसर्च जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंस, जनवरी–जून 4 (2) : 443–446
10.श्रीवास्तव मधुलिका. (2009) "कामकाजी महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक स्थिति, रिसर्च जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंस, जनवरी–जून, 6 (3) ' 618–620.
11.सिंह, डी.पी. (2009) "ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, रिसर्च जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंस, जनवरी–जून, 6 (3), 640–642.
12.पाल, रामबाबू. (2009) "रीवा जिले की दलित महिलाओं का राजनैतिक सशक्तिकरण", रिसर्च जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंस, जनवरी–जून, 6 (3) 647–650.
13.सिंह अंजू, सोनेजी भावना, एवं उपाध्याय एकता. (2009), "आरक्षण व्यवस्था महिलओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक आन्दोलन (आदिवासी महिलाओं के विशेष संदर्भ में)" रिसर्च लिंक 62, V III (3) May – 127-129.
14.अवस्थी मंजरी. (2009) "भारतीय कृषक परिवारों की महिलाओं की समस्याएँ", रिसर्च लिंक 59, Vol- VII (12), फरवरी, पेज 82–83.
15.दुबे अराधना, शर्मा रेणुका (2009) "कामकाजी महिलाएँ और समकालीन चुनौतियाँ – एक अध्ययन", रिसर्च लिंक – 59, Vol- VII (12), फरवरी, पेज 137–139.
16.खान एम.एस. एवं नियाज, अहमद. (2009) "घरेलू हिंसा संरक्षण अधिनियम : महिला सशक्तिकरण हेतु ठोस कदम" रिसर्च लिंक – 35, Vol – V(10), जनवरी, पृष्ठ 67–68.
17.गुप्ता अग्रवाल, विमलेश निऊ (2010) "स्वतंत्र आंदोलन में महिलाओं की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन", (शोध प्रकल्प) मई 51 (20) 22–23.

पुस्तकें

1.Mehrotra S.N. (1976) Labour Problem is India. New Delhi : S. Chand and Com.
2.Alteker A.S. (1986) Women in India Civilization. New Delhi, Jaipur, Allahbad : National Publising House
3.Lavania M.M. (1986) Sociology fo Indian Women. New Delhi, Jaipur, Allahbad : National Publising House.
4.सिन्हा, वी.सी. . (1986).श्रम अर्थशास्त्र . नई दिल्ली, जयपुर, इलाहाबाद : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस।
5.Jha. S. (1990) Agricultural Labour . New Delhi : Deep & Deep Publications.
6.आनन्द कुमार (1996) भारतीय समसज एवं संस्थाऐं, उदयपुर : शिवा पब्लिशर्स।
7.Desai Neera (1996) Women in Modern India, Udaipur, Shiva Publishers.
8.लखनपाल चंद्रावती (1996) स्त्रियों की स्थिति . उदयपुर : शिवा पब्लिशर्स।
9.अग्रवाल अनुपम (1999) भारतीय अर्थव्यवस्था आज तक . आगरा : साहित्य भवन।
10.कावडिया गणेश एवं प्रकाश ज्ञान (2000) नई सदी में भारतीय अर्थव्यवस्था की आर्थिक चुनौतियाँ पुनश्चर्या कार्यक्रम में प्रस्तुत आलेख) इन्दौर : अर्थशास्त्र अध्ययन – शाला एवं एकेडमिक स्टॉफ कालेज देवी अहिल्या विश्वविद्यालय।
11.तिवारी आर. पी. एवं शुक्ला डी. पी. (2002) भारतीय नारी वर्तमान समस्याऐं और भाव समाधान . नई दिल्ली : ए.पी. ए. पब्लिशिंग कार्पोरेशन।
12.अग्रवाल ए.एन. (2003) भारतीय अर्थव्यवस्था विकास एवं आयोजन, नई दिल्ली : विश्व प्रकाशन न्यू एज इन्टरनेशनल प्र. लि.
13.शुक्ला एस. एम. एवं सहाय शिवपूजन (2004) साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
14.रुद्रदत्त के. पी. एवं सुन्दरम (2005) भारतीय अर्थव्यवस्था . नई दिल्ली : एस. चाँद एण्ड कम्पनी लि.
15.गुप्ता, एस. सी. एवं अग्रवाल एम. डी. (2008), ग्रामीण रोजगार, वर्तमान स्थिति तथा भविष्य के लिए रणनीतियाँ, पृष्ठ – 195–201, इनाश्री पब्लिशर्स, रायपुर।
16.पंत डी. सी. (2009) भारत में लघु एवं कुटीर उद्योग, पृष्ठ 210–223, विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
17.त्रिपाठी संजय, त्रिपाठी चंदन . (2012) छत्तीसगढ़ में कृषि, छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ, पृष्ठ 288।
18.आर्थिक सर्वेक्षण, (छत्तीसगढ़ शासन), आर्थिक एवं सांख्यिकीय संचालनालय, छत्तीसगढ़ रायपुर (विभिन्न प्रतियाँ 2010–11 से 2012–13)।
19.आर्थिक सर्वेक्षण भारत सरकार, विभिन्न प्रतियाँ 2010–11 से 2012–113।
20.भारत 2011–12 सुमन एस. पब्लिकेशन हाऊस, दिल्ली पृष्ठ – 184
21.अखिलेश एस. एवं शुक्ला संध्या (2014) गायत्री पब्लिकेशन्स, बिहिया, रीवा।

पत्रिकाएं :–

1.सिन्हा, श्रीमति मृदुला . (2003) "केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की स्वर्ण जयंती", योजना, अगस्त 47(5) 32–34
2.सिंह जे. . (2003), "महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक अधिकारिता", योजना, अगस्त 45(5) 15–18
3.भाग्यलक्ष्मी जे. . (2004) "महिला अधिकारिता", योजना, अगस्त 48(5), 25–28
4.भारत सरकार की जनहितकारी योजनाएं आम आदमी लाभ उठाये योजनाएं केवल आपके लिए . नई दिल्ली : विज्ञान और दृश्य प्रसार निर्देशाल सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय।
5.श्रीवास्तव, छवि . (2006), सूचना के अधिकार और महिला सशक्तिकरण योजना, मई 50(7) 33–36
6.जैन, इंदु . (2007) "ग्रामीण श्रमिकों की दशा और दिशा", कुरुक्षेत्र, मई, 53(7) 27–29
7.राजारमण, इंदिरा . (2007) ग्यरहवीं योजना में महिलाएं, योजना, मई 51(2) 28–31
8.कुमार, योगेश . (2010) "ग्रामीण महिलाएँ और सशक्तिकरण", आजकल, मई, 65(5) 7–8

समाचार पत्र

1.कृषि क्षेत्र में अनुसूचित जाति की महिलाओं पर रिर्पाट : नई दिल्ली : राष्ट्रीय महिला आयोग (1998) पृष्ठ –110
2.यादव, हनुमंत . (2006 मार्च) "छत्तीसगढ़ का विकास : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ, हरिभूमि, बिलासपुर संस्करण, पृष्ठ 74
3.कृषि क्षेत्र में महिलाएँ, हरिभूमि (8 मार्च, 2013) पृष्ठ – 2
4.बदलाव विकास तथा महिलाएँ, हरिभूमि (29 मार्च 2013) पृष्ठ – 3
5.वर्मा, सुषमा . (2014 जनवरी) "कामकाजी महिलाओं की संख्या में आई गिरावट" नवभारत, बिलासपुर संस्करण, पृष्ठ – 4
6.Web Pages
7.www.epw.in/system/files/pdf/1954-6/4-5cottag-industries-inmadras=state.pdf.
8.www.ifad.org/events/op/2008/microfinance.

9.http://panchjanya.com/arch/2009/1/18/files.ttm.
10.www.indianchild.com/woman-ofrulal-india.htm.
11.planningcommission.nic/reports/publications/pub80-villageand cottageindustry.
12.director,instituteof women'suniversityof lucknow,lucknow.
13.womenempowermentinindia-milestones&challengesfile//N/P.Hd/womenwatchinternational dayofruralwomen.htm.
14.http://ec.europa.eu/agriculture/rur/leader2/rural-en/biblio/women/art03.htm.
15.http://www.fao.org/europ/sec/women-empowerment-through-enhancing-agricu.
16.http://www.mu.c.in/arts/social-science/eco/pdfs/dtl/wpecodtl1202.pdf.
17.http://cghelth.nic/ehealth/studyreports/chhattisgarhexperiencewith3-year.pdf.
18.http://naasindia.orgpolicypaper/pphpdf.
19.http://www.in.undp.org/content/india/en/home/operations/about-undp/undp-in-chhat.
20.http://ec.europa.eu/agriculture/publi/women/broch-en.pdf.

मनीशा दुबे
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष , अर्थशास्त्र विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org